भक्ति संहिता

BHAKTI SAMHITA · SACRED SCRIPTURES

भगवान विष्णु

विष्णु चालीसा

VISHNU CHALISA

॥ श्री भगवान विष्णु की कृपा से ॥

भक्ति संहिता

विष्णु चालीसा

VISHNU CHALISA

॥ दोहा ॥

नमो विष्णु भगवान को, सहस्र नाम उचार।
दे दर्शन अपने भक्त को, करो दीन पर प्यार॥

॥ चौपाई ॥

01 जय विष्णु जगत के पालनहारे।
सकल सृष्टि के तुम आधारे॥

02 जय लक्ष्मीपति दीनदयाला।
शंख चक्र गदा पद्म विशाला॥

03 पीताम्बर धारी शोभा सारा।
चार भुजा रूप मनोहारा॥

🌸 जय नारायण 🌸

04 करत सदा भक्तन की रखवारी।
नाशत असुर अतुलित बलधारी॥

05 मत्स्य कूर्म वराह नरसिंहा।
वामन परशु राम रघुवंशा॥

06 बलराम कृष्ण कल्कि अवतारा।
दश रूपों में जगत उजियारा॥

07 हिरण्यकश्यप वध कर डारा।
भक्त प्रहलाद को दिया सहारा॥

08 बलि से छल कर भूमि नापी।
तीन पग में जग को मापी॥

विष्णु सहस्रनाम

09 गजराज जब विपत्ति में परा।
भागि आये तुम तुरत उबारा॥

10 द्रौपदी की लाज जब गई।
चीर बढ़ाय मान रखि लई॥

11 क्षीरसागर में शेष-शयन।
लक्ष्मी सेवत चरण प्रतिदिन॥

12 सुर-असुर मिल सागर बिलोयो।
अमृत निकसि देवन को दियो॥

13 शंखासुर मधु कैटभ मारे।
त्रिभुवन को भय दुख निवारे॥

14 तुलसी दल प्रिय तुमहिं सुहाई।
बिना तुलसी पूजा न भाई॥

15 नारद ऋषि तुम्हरे यश गावें।
ब्रह्मा-शिव शीश नवावें॥

16 योगमाया तुम्हरी अपरम्पारा।
सृष्टि रचाय धरो अवतारा॥

17 कमल नयन मुखकमल सुहाना।
अति प्रिय भक्त तुम्हें पहचाना॥

18 भक्त बिदुर विदुरानी माँहीं।
साग खाय तुमने आनन्द पाहीं॥

जय जगदीश

19 सुदामा के चावल स्वीकारे।
दरिद्र मित्र को धनपति कारे॥

20 गोपियन संग रास रचाया।
ब्रज में प्रेम भक्ति उजियाया॥

21 गीता ज्ञान अर्जुन को दीन्हा।
धर्म-रक्षा का मार्ग चीन्हा॥

22 सर्वव्यापी सर्वशक्तिमाना।
अनन्त रूप तुम्हारो जाना॥

23 गरुड़ वाहन नीलकाय धारी।
वैकुण्ठ में सदा विहारी॥

24 जो तुमको एकाग्र ध्यावें।
संसार सागर से तर जावें॥

25 राम नाम तारक मंत्र तुम्हारा।
जपत सब पापों का होय निवारा॥

26 जो नर नित्य ध्यान तुम्हरो धरे।
भव के बंधन सकल कटि जाय॥

27 ब्रह्म रुद्र शेष तुम्हरे गुण गावें।
चार वेद यश तुम्हारो गावें॥

28 जो विष्णु चालीसा नित गावे।
सब विपत्ति से मुक्ति पावे॥

ॐ नमो नारायणाय

29 रोग दोष दारिद्र्य नशावें।
जो विष्णु का नाम जपावें॥

30 संकट से भक्तन को बचावें।
मोक्ष का मार्ग तुम दिखलावें॥

31 एकादशी व्रत जो पालन करे।
वैकुण्ठ धाम को वो जन वरे॥

32 तुलसी माला जो गले धरावे।
विष्णु लोक में वास वो पावे॥

33 पुण्य नदी में स्नान जो करते।
तुम्हरे ध्यान से पाप जो हरते॥

34 विष्णु पुराण जो पाठ सुनावे।
जन्म-जन्म के पाप मिटावे॥

35 भक्ति-भाव जो मन में आनी।
पूरण करते मनोकामनी॥

36 संसार में जो दुखी जन होई।
तुम्हरो ध्यान करे सुखी सोई॥

37 धर्म न्याय के रक्षक भगवाना।
अधर्म का विनाश कर जाना॥

38 अनन्य शरण जो तुम्हरी लेई।
भव सागर से पार कर देई॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

39 विष्णु नाम जो नित्य जपावे।
इच्छित फल मनोरथ पावे॥

40 सेवक सदा तुम्हारो दासा।
पूरण करो मन की आसा॥

॥ दोहा ॥

जय विष्णु जय जगपालक, भक्तन के आधार।
दुःख हरो सुख दीजिये, करो कृपा अपार॥

॥ जय विष्णु — ॐ नमो नारायणाय ॥

🌸 **फल:** विष्णु चालीसा का पाठ प्रतिदिन करने से समस्त पापों का नाश होता है, रोग-दोष दूर होते हैं। एकादशी के दिन व्रत के साथ पाठ करने से विशेष फल मिलता है। भगवान विष्णु की भक्ति से मोक्ष की प्राप्ति होती है।